2 राजनीति व धर्म से परे है देशभक्ति

सूक्ति उठो, जागो जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए, मत रुको। –स्वामी विवेकानंद

डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

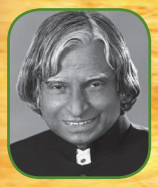

परिचय : डॉ० ए०पी०जी० अब्दुल कलाम के नाम से प्रसिद्ध अब्दुल पाकिर जैनुल आबदीन अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को रामेश्वरम (तमिलनाडु) में हुआ। बचपन में काफी आर्थिक समस्याओं को झेलने के बावजूद उन्होंने शिक्षा के दामन को नहीं छोड़ा। अपनी शिक्षा व विलक्षण प्रतिभा के बूते वैज्ञानिक बने डॉ० कलाम भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति चुने गये। उन्होंने कई भावोत्तेजक व सारगर्भित पुस्तकें लिखीं। उनका जीवन लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है। 'भारत रत्न' समेत कई उपाधियों व पुरस्कारों से सम्मानित कर्म के इस पुजारी का निधन 27 जुलाई, 2015 को हो गया।

प्रस्तावना : इस निबंध में लेखक ने देश के विकास के लिए अधिक मेहनत करने का आह्वान लोगों से किया है। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है शक्तिशाली देश का मतलब होता है सैन्यबल और आर्थिक सम्पन्नता।

मार्च 2002 में मैं अन्ना विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष के करीब दो सौ छात्रों को पढ़ा रहा था और 'प्रौद्योगिकी तथा उनके विविध आयाम' विषय पर मैंने दस व्याख्यानों की शृंखला तैयार की थी। व्याख्यान के अंतिम दिन दोहरे प्रयोगवाली प्रौद्योगिकी पर चर्चा चल रही थी। छात्रों ने सवाल किया–

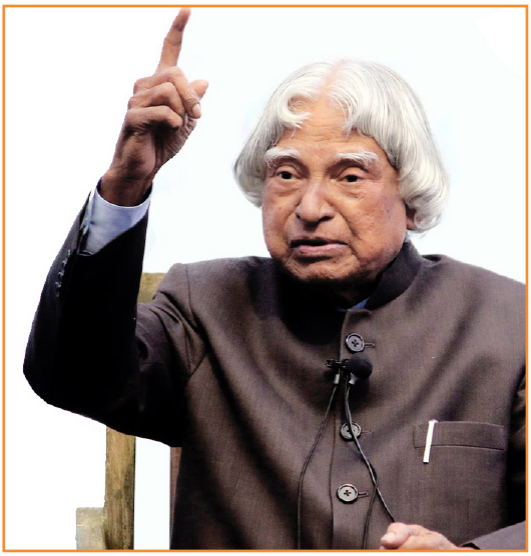

'सर, मैंने हाल में डॉ० अमर्त्य सेन का एक बयान पढ़ा है जिसके अनुसार, मई 1998 में भारत द्वारा परमाणु परीक्षण करने का फैसला सही नहीं था। डॉ० सेन महान अर्थशास्त्री और नोबेल पुरस्कार विजेता हैं तथा विकास संबंधी उनके विचारों को काफ़ी तरज़ीह भी दी जाती है। ऐसे व्यक्ति के बयान को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। इस बारे में आपका क्या विचार है?'

'मैं आर्थिक विकास के क्षेत्र में उनकी महानता का लोहा मानता हूँ और उनके सुझावों, मसलन प्राथमिक शिक्षा पर जोर दिया जाए वगैरह का भी स्वागत करता हूँ,' मैंने कहा, 'लेकिन साथ ही मुझे यह भी लगता है कि डॉ० सेन शायद भारत को पश्चिम के नजरिए से देखते हैं। उनका विचार है कि आर्थिक समृद्धि के लिए भारत के सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध होने चाहिए। मैं इससे सहमत हूँ, लेकिन हमें भारत के अतीत के अनुभव को भी ध्यान में रखना होगा। पंडित नेहरू ने संयुक्त राष्ट्र में परमाणु प्रचार के विरोध में भाषाण दिया था और किसी भी देश के

शब्दार्थ – व्याख्यान–भाषण/Speech, मैत्रीपूर्ण–मित्र के समान/Friendly, परमाणु–अणु/Atom.

पास परमाणु हथियारों के न होने की वकालत की थी लेकिन नतीजा क्या रहा यह हम सभी जानते हैं। हमें यह पता होना चाहिए कि अमेरिकी धरती पर दस हजार से अधिक परमाणु प्रक्षेपास्त्र हैं, रूस के पास भी दस हजार परमाणु प्रक्षेपास्त्र मौजूद हैं और इंग्लैंड, चीन, फ्रांस, पाकिस्तान तथा अन्य देशों के पास भी ये भारी संख्या में हैं। स्टार्ट-II तथा अमेरिकी और रूस के बीच हाल में हुए अन्य समझौतों के तहत इनकी संख्या घटाकर इनमें प्रत्येक के पास दो हजार प्रक्षेपास्त्र करने की है लेकिन ये समझौते अभी लड़खड़ा रहे हैं। कोई भी इनकी संख्या में कमी करने की बात को गंभीरता से नहीं ले रहा है। जो लोग मई 1998 के परीक्षण का विरोध कर रहे हैं उन्हें अमेरिका, रूस या अन्य पश्चिमी देशों में परमाणु हथियारों का स्तर शून्य तक घटाने को लेकर आंदोलन करना चाहिए। यह याद रखना आवश्यक है कि हमारे दो पड़ोसी देश परमाणु हथियारों तथा प्रक्षेपास्त्रों से लैस हैं। क्या ऐसे में भारत मूकदर्शक बना रह सकता है?'

पिछले तीन हजार वर्षों में भारत पर एक-एक कर कई हमलावरों ने हमले किए, जिनमें इंग्लैंड, फ्रांस, डच और पुर्तगाल शामिल हैं जो अपने प्रदेशों का विस्तार करने या धर्म का प्रचार-प्रसार करने अथवा हमारे देश की दौलत को लूटने के इरादे से यहाँ आये थे। भारत ने कभी अन्य देशों पर कोई हमला क्यों नहीं किया? क्या इसलिए कि हमारे राजा-महाराजा बहादुर नहीं थे? सच यह है कि भारतीय सहिष्णु रहे हैं और उन्होंने कभी भी इस बात पर विचार नहीं किया कि सदियों तक दूसरों के शासन में रहने के क्या परिणाम हो सकते हैं लेकिन लम्बे संघर्ष के बाद जब हमें आज़ादी मिली और देश एक हुआ तथा उसकी भौतिक सीमाएँ भी स्पष्ट हो गईं, तो क्या सिर्फ आर्थिक समृद्धि को ही लक्ष्य मानकर रहना चाहिए? देश की ताकत को जताने का एकमात्र तरीका है उसकी रक्षा करने की क्षमता का होना। ताकत ही ताकत का सम्मान कर सकती है, न कि कमज़ोरी। ताकत का अर्थ है सैन्यबल और आर्थिक सम्पन्नता। संयुक्त राष्ट्र के फैसलों और नीतियों को वे लोग तय करते हैं जिनके पास परमाणु हथियार पहले से मौजूद हैं। ऐसा कैसे हुआ कि हमें अब तक भी सुरक्षा परिषद् की सदस्यता नहीं दी गई जबकि अब कई देशों ने सदस्य बनने की सिफारिशें करनी शुरू कर दी हैं।

इस सम्बन्ध में मैं एक घटना का ज़िक्र करना चाहूँगा। मेरे दोस्त एडमिरल एल. रामदास ने जो नौसेना प्रमुख पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं, मुझसे कहा कि वे मई 1998 में किए गए परमाणु परीक्षण के विरोध में कुछ लोगों के साथ मिलकर संसद के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। मैंने उनसे कहा कि पहले उन्हें इन लोगों के साथ मिलकर व्हाइट हाउस और क्रेमलिन के सामने विरोध प्रदर्शन करने चाहिए क्योंकि वहाँ भारी मात्रा में परमाणु प्रक्षेपास्त्र जमा हैं।

मैं लोगों से देश की महानता को वरण करने का आह्वान करता हूँ। सभी भारतीयों से मेरा आग्रह है कि वे अपनी अधिकतम क्षमता से बढ़-चढ़कर काम करें। वे कौन सी ताकतें हैं जो देशों को ऊँचा उठाती हैं या उनके पतन का कारण बनती हैं? और वे कौन से कारक हैं जो किसी देश को मजबूत बनाते हैं? किसी भी ताकतवर राष्ट्र में तीन विशेषताएँ होती हैं – अपनी उपलब्धियों के प्रति गर्व की भावना, एकता तथा संयुक्त रूप से कार्य करने की योग्यता।

अधिकतम स्तर तक उन्नति करने के लिए एक देश को चाहिए कि वह अपने नायकों तथा उनकी शौर्य-गाथाओं, साहसिक पराक्रमों और अतीत की विजयों की स्मृति को जीवंत बनाकर रखे। इंग्लैंडवासी ऊँचाइयों को इसलिए छू

शब्दार्थ – परीक्षण–प्रयोग/Experiment, विरोध–प्रतिकूल/Opposition, ज़िक्र–उल्लेख/Quote.

पाए क्योंकि उनके पास लॉर्ड नेल्सन और ड्यूक आफ वेलिंगटन जैसे प्रशंसनीय नायक थे। जापान अपने राष्ट्रीय गर्व को प्रदर्शित करनेवाला देश है। जापानी अपनी एकता, एक संस्कृति तथा अपनी अपमानजनक सैन्य पराजय को आर्थिक जीत में बदलने को लेकर काफी गर्व का अनुभव करते हैं।

जो भी देश महान हुए हैं उसके पीछे मिशन की भावना रही है। जापानियों में यह भावना कूट-कूटकर भरी है। इसी तरह जर्मन भी यही भावना रखते हैं। तीन दशकों की अवधि में ही जर्मनी का दो बार विनाश हुआ लेकिन इसके बावजूद उसकी जनता का जज़्बा फीका नहीं पड़ा। दूसरे महायुद्ध की विभीषिका को झेलने के बाद वह ऐसा राष्ट्र बनकर उभरा जो आर्थिक दृष्टि से तो ताकतवर था ही राजनीतिक मोर्चे पर भी उसने अपनी उपस्थिति दर्ज़ कराई। यदि जर्मनी एक महान देश बन सकता है तो भारत भी क्यों नहीं महान हो सकता?

सौभाग्यवश मुझे अपने देश के विभिन्न धर्मों को जानने और उनके बारे में पढ़ने का बचपन से ही मौका मिला। हाई स्कूल में और उसके बाद भी मैंने कुल मिलाकर लगभग सत्रह वर्षों तक धर्म संबंधी शिक्षा पाई। मैंने पाया कि सभी धर्मों का केंद्रीय विषय मनुष्य को आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ रखना है। हमें यह समझना होगा कि वास्तव में भारत में धर्मनिरपेक्षता की बुनियाद भी आध्यात्मिकता से ही तैयार हो सकती है।

चूँकि हमारी मिशन भावना कमज़ोर पड़ी है इसलिए हम अपनी संस्कृति और अपने प्रति सच्चे नहीं बने रह पाए हैं। यदि हम खुद को उन विभाजित लोगों की तरह देखेंगे जिनके मन में अपने अतीत के प्रति कोई गर्व का भाव नहीं है और भविष्य पर जिन्हें भरोसा नहीं है तो सिवाय खीझ, निराशा और अँधकार के हमारे हाथ क्या लगेगा?

हमारी एकता की भावना और हमारे लक्ष्यों के प्रति हमारी लगन को सबसे ज्यादा खतरा उन विचारकों से है जो जनता को विभाजित करना चाहते हैं। भारतीय संविधान ने सभी नागरिकों को संपूर्ण बराबरी का हक दिया है। अब चिंता का विषय यह है कि धार्मिक स्वरूप को धार्मिक भावनाओं पर लादने की कोशिश की जा रही है। हम अपनी विरासत के लिए धर्म की जगह सांस्कृतिक संदर्भ क्यों नहीं विकसित कर सकते जो हम सभी को भारतीय बनाने के लिए कार्य करेगा। समय आ गया है कि हम भेदभाव करना बंद करें। हमें आज राष्ट्र के लिए ऐसी दृष्टि की ज़रूरत है जो एकता ला सके।

जब हम भारत को उसके गौरव के साथ उसके अतीत को आधार मानकर स्वीकार करेंगे तभी हम शांति और समृद्धि से भरपूर सभी के लिए एकसमान भविष्य की उम्मीद रख सकते हैं जहाँ सर्जन होगा और संपन्नता होगी। हमारा अतीत हमेशा हमारे साथ है। इसे सँभालकर रखना है, न कि राजनीतिक उठापटक के चलते नष्ट कर देना है।

विकसित भारत, शहरों का राष्ट्र नहीं होगा। वह समृद्ध गाँवों का एक तंत्र होगा जो दूर-चिकित्सा (टेली मेडिसिन), दूर-शिक्षा (टेली एजुकेशन) और ई-कॉमर्स संपन्न होगा। जैव प्रौद्योगिकी, जैव विज्ञान तथा कृषि विज्ञान और औद्योगिक विकास से ही नए भारत का उदय होगा। राजनीतिक नेता इस उत्साही भावना को लेकर काम करेंगे कि राष्ट्र का स्थान व्यक्तिगत हितों और राजनीतिक पार्टियों से ऊपर है। यह दृष्टिकोण ग्रामीण-शहरी आबादी प्रकृति के बेहतरीन उत्पादन को संपदा का लाभ उठाने के लिए ग्रामीण इलाकों में प्रवास करेगी।

शब्दार्थ – विनाश–बरबाद/Ruin, सौभाग्यवश–अच्छे भाग्य से/Fortunately, बराबरी–समानता/Equality.

हमारे नेतृत्व के समक्ष सबसे आवश्यक और महत्त्वपूर्ण चुनौती रचनात्मक बदलाव लाने की, सभी ताकतों को एकजुट करने और उन्हें अभियान के लिए प्रेरित करने की है। भारत एक अरब की आबादीवाला, विविध धर्मों और समुदायों का देश है। यहाँ भौगोलिक विविधता के साथ-साथ व्यापक स्तर पर वैचारिक विभिन्नता भी है। यह हमारी सबसे बड़ी ताकत है। दरअसल, खंडित सोच, खाँचाबद्ध योजनाएँ और अलग-अलग किए गए प्रयासों के कुछ विशेष परिणाम नहीं निकलेंगे। समरस भारत के निर्माण के लिए लोगों को एक साथ आना होगा।

विकसित भारत की दूसरी परिकल्पना ही यहाँ पुनर्जागरण लाएगी। शक्तिशाली भारत के निर्माण का दायित्व दूरदृष्टि संपन्न राजनीतिक नेतृत्व के हाथों में है।

—ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

शब्दार्थ – पुनर्जागरण—पुनः जीवन/Revival, प्रयास—प्रयत्न/Effort, चुनौती—ललकार/Challenge.

शिक्षा – किसी भी देश की शक्ति का मानदंड सैन्यबल होता है।

अभ्यास से सीखें

संकलित अभिव्यक्ति

1. व्याकरणिक शब्द ज्ञान–

(क) संधि–दो शब्दों के मेल से जब उनकी निकटवर्ती ध्वनियों में (स्वर + स्वर, स्वर + व्यंजन, स्वर + विसर्ग, व्यंजन + व्यंजन) परिवर्तन आता है तो उसे संधि कहते हैं। संधि के तीन रूप हैं–1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि, 3. विसर्ग संधि।

इनको अलग करने की विधि संधि-विच्छेद कहलाती है।

उदाहरण–सूर्य + उदय = अ + उ = ओ = सूर्योदय

प्रक्षेप + अस्त्र = अ + अ = आ = प्रक्षेपास्त्र

(ख) निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए–

ब्रह्मास्त्र – ..... यथोचित – .....

परोपकार – ..... धर्मात्मा – .....

(ग) पाठ से ढूँढ़कर निम्न शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

विपन्नता – ..... एकल – ..... सम्मानजनक – ..... जय – .....

अवनति – ..... सृजन – ..... दुर्भाग्य – ..... अपूर्ण – .....

(घ) निम्नलिखित शब्दों के मूलशब्द और प्रत्यय अलग कीजिए–

भौगोलिक

वैचारिक

उत्साही

रचनात्मक

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए–

व्याख्यान – ..... परमाणु – ..... समझौता – ..... संख्या – .....

हथियार – ..... सीमा – ..... सिफारिश – ..... भावना – .....

मौखिक

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) डॉ. कलाम किसे पढ़ा रहे थे?

(ख) डॉ. कलाम किस क्षेत्र में किसका लोहा मानते थे?

(ग) मिशन-भावना कमज़ोर पड़ने से भारतीयों की क्या हानि हुई?

लिखित

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) डॉ. कलाम ने किस विषय पर कितने व्याख्यान तैयार किए?

(ख) डॉ. अमर्त्य सेन कौन हैं? उनके किन विचारों का वर्णन छात्र द्वारा किया गया?

(ग) परमाणु प्रक्षेपास्त्र किन देशों के पास कितनी मात्रा में हैं? इन पर हुए समझौते क्यों लड़खड़ा रहे हैं?

(घ) डॉ. कलाम ने देशवासियों से क्या आग्रह किया?

(ङ) भारतीय एकता को किन लोगों से ज्यादा खतरा है और क्यों?

वैकल्पिक

4. सही उत्तर पर (✓) सही का निशान लगाइए।

(क) डॉ० सेन के द्वारा किसका परीक्षण सही नहीं था?

(*i*) मिसाइल ◯ (*ii*) परमाणु ◯ (*iii*) रॉकेट ◯

(ख) किस विकास क्षेत्र में डॉ० कलाम डॉ० सेन का लोहा मानते थे?

(*i*) राजनैतिक ◯ (*ii*) सामाजिक ◯ (*iii*) आर्थिक ◯

(ग) पिछले कितने वर्षों में भारत पर हमले हुए?

(*i*) तीन हजार ◯ (*ii*) दो हजार ◯ (*iii*) एक हजार ◯

(घ) भारत में किसकी बुनियाद आध्यात्मिकता से तैयार की जा सकती है?

(*i*) धर्म निरपेक्षता ◯ (*ii*) राजनैतिक ◯ (*iii*) आर्थिक ◯

(ङ) डॉ० कलाम ने लोगों से कहाँ परमाणु परीक्षण-विरोध करने को कहा?

(*i*) अमेरिका की सड़कों पर ◯

(*ii*) व्हाइट हाउस और क्रेमलिन के सामने ◯

(*iii*) दिल्ली के लाल किले के सामने ◯

5. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) ..... ने संयुक्त राष्ट्र में ..... प्रचार के विरोध में भाषण दिया।

(ख) देश की ताकत को जानते का एकमात्र ..... है उसकी ..... करने की ..... का होना।

(ग) देश को चाहिए कि वह अपने नायकों तथा उनकी ..... पराक्रमों और ..... की विजयों की ..... को जीवंत रखें।

(घ) भारत एक अरब की ..... विविध और ..... का देश है।

(ङ) विकसित भारत की दूसरी ..... ही यहाँ लाएगी।

6. निम्नलिखित पंक्तियों की संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए––

'ताकत ही ताकत का सम्मान कर सकती है न कि कमज़ोरी। ताकत का अर्थ है–सैन्यबल और आर्थिक संपन्नता।'

7. जब तक हम अपने देश की सभ्यता-संस्कृति का पालन नहीं करेंगे, विकास के क्षेत्र में पिछड़े रहेंगे? इस पर आपका क्या विचार है? लिखें।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. डॉ० कलाम के विज्ञान के क्षेत्र में दिए गए योगदानों के विषय में एक परियोजना तैयार कीजिए।
2. डॉ० कलाम भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति थे। प्रथम दस राष्ट्रपतियों के चित्र चिपकाकर उनके नाम भी लिखिए–

शिक्षण संकेत – विद्यार्थियों को भारतीय वैज्ञानिकों के संबंध में उपयुक्त जानकारी प्रदान करें।